राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–**pr.rajbhavan@gmail.com**
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

आयुर्वेदिक चिकित्सा–पद्धति के विकास में बिहार की अग्रणी भूमिका रही है–राज्यपाल

पटना, 25 दिसम्बर 2019

''आयुर्वेद के क्षेत्र में बिहार का गौरवमय इतिहास रहा है। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय का प्रारंभ ही आयुर्वेद संकाय से हुआ था। नालंदा विश्वविद्यालय के पहले कुलपति रसशास्त्र के उदभट्ट विद्वान नार्गाजुन हुए थे, जिनके कार्यकाल में रस–औषधियों का विकास व्यापक स्तर पर हुआ था। प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय में सोना इत्यादि खनिज पदार्थों से औषधियाँ बनाकर स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन के लिए शोध एवं अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था की गई थी, जहाँ पर पूरी दुनियाँ के लोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते थे।'' –उपर्युक्त उद्‌गार, महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान ने स्थानीय राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज के सभागार में ''हर्बोमिनरल दवाओं के मानकीकरण से जुड़े हालिया दृष्टिकोण'' विषयक राष्ट्रीय सेमिनार का उद्‌घाटन करते हुए व्यक्त किये। राज्यपाल ने कहा कि च्यवन ऋषि की जन्मभूमि एवं कर्मस्थली भी बिहार की ही भूमि थी, जिन्होंने औषध–निर्माण के क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया था। उनके द्वारा निर्मित 'च्यवनप्राश' भारत में ही नहीं, वरन दुनिया के बहुतेरे लोगों द्वारा आज भी प्रयोग में लाया जाता है।

राज्यपाल श्री चौहान ने कहा कि आयुर्वेदिक–चिकित्सा–पद्धति हमारी भारतीय वैदिक संस्कृति से जुड़ी हुई है। विश्व की जितनी भी चिकित्सा पद्धतियाँ आज 'मेडिकल साइंस' की दुनियाँ में प्रचलित हैं, उन सबकी जननी किसी–न–किसी रूप में हमारी आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति ही है।

राज्यपाल ने कहा कि आयुर्वेद के अध्ययन के लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन जरूरी है। संस्कृत हमारे ज्ञान–विज्ञान की एक अत्यन्त समृद्ध भाषा है, जो आज के कम्प्यूटर युग में तकनीकी तौर पर भी अत्यन्त विकसित पायी गई है। छात्रों को संस्कृत का पूरे मनोयोग से अध्ययन करना चाहिए, ताकि आयुर्वेद ग्रंथों के अध्ययन में उन्हें आसानी हो।

राज्यपाल श्री चौहान ने कहा कि राजकीय आयुर्वेद कॉलेज, पटना भी अपने स्थापना–काल से ही रस–औषधियों के निर्माण, शोध एवं अध्ययन–अध्यापन के क्षेत्र में अव्वल रहा है। इस कॉलेज के अनेक पूर्व एवं वर्तमान आयुर्वेद–आचार्यों ने रसशास्त्र एवं औषध निर्माण के क्षेत्र में अपनी पहचान को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित कर ख्याति अर्जित की है।

राज्यपाल ने कहा कि राजभवन भी आयुर्वेद–चिकित्सा को प्रोत्साहित करने हेतु पूर्ण तत्पर है। राजभवन परिसर में 'धन्वन्तरि वाटिका' की स्थापना की गई है, जहाँ आयुर्वेदिक औषधियों से जुड़े महत्वपूर्ण पौधे लगाये गये हैं।

आगे पृष्ठ...2 पर

राज्यपाल ने विश्वास व्यक्त किया कि आयुर्वेद कॉलेज में आज आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार और प्रदर्शनी के संयुक्त आयोजन से राज्य में आयुर्वेद–चिकित्सा के विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद–चिकित्सा भारतीय संस्कृति और लोक–मानस के काफी करीब है तथा यह एक अत्यन्त प्रभावी चिकित्सा–प्रणाली है। यह जड़–मूल से रोगों का निदान करती है तथा इसके बुरे 'साइड एफेक्ट' भी मानव शरीर पर नहीं पड़ते।

राज्यपाल ने कार्यक्रम के दौरान भगवान धन्वन्तरि एवं भारतरत्न पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की तस्वीरों पर माल्यार्पण भी किया। उन्होंने अपने संबोधन के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री स्व॰ अटल जी को उनकी जयंती के अवसर पर नमन भी किया। राज्यपाल ने कार्यक्रम में 'स्मारिका' का भी विमोचन किया।

कार्यक्रम में बिहार विधान सभा में उप मुख्य सचेतक (सत्तारूढ़ दल) श्री अरूण कुमार सिन्हा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के इस उद्घाटन–सत्र में राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ॰ दिनेश्वर प्रसाद ने स्वागत–भाषण किया, आयोजन–सचिव डॉ॰ सुमेश्वर सिंह ने कार्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला तथा धन्यवाद–ज्ञापन विशेष सचिव श्री अरविन्दर सिंह ने किया।

.....